

Vol 4 Issue 12 Jan 2015

ISSN No : 2230-7850

---

International Multidisciplinary  
Research Journal

*Indian Streams  
Research Journal*

Executive Editor  
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief  
H.N.Jagtap

---

## Welcome to ISRJ

**RNI MAHMUL/2011/38595**

**ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board. Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

### *International Advisory Board*

Flávio de São Pedro Filho Federal University of Rondonia, Brazil	Mohammad Hailat Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken	Hasan Baktir English Language and Literature Department, Kayseri
Kamani Perera Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka	Abdullah Sabbagh Engineering Studies, Sydney	Ghayoor Abbas Chotana Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]
Janaki Sinnasamy Librarian, University of Malaya	Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania	Ilie Pintea, Spiru Haret University, Romania
Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Xiaohua Yang PhD, USA
Anurag Misra DBS College, Kanpur	George - Calin SERITAN Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences AL. I. Cuza University, Iasi	.....More
Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania		

### *Editorial Board*

Pratap Vyamktrao Naikwade ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India	Iresh Swami Ex - VC. Solapur University, Solapur	Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur
R. R. Patil Head Geology Department Solapur University,Solapur	N.S. Dhaygude Ex. Prin. Dayanand College, Solapur	R. R. Yalikar Director Managment Institute, Solapur
Rama Bhosale Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel	Narendra Kadu Jt. Director Higher Education, Pune	Umesh Rajderkar Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik
Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur	K. M. Bhandarkar Praful Patel College of Education, Gondia	S. R. Pandya Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai
Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai	Sonal Singh Vikram University, Ujjain	Alka Darshan Shrivastava Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar
Chakane Sanjay Dnyaneshwar Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune	G. P. Patankar S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka	Rahul Shriram Sudke Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore
Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)	Maj. S. Bakhtiar Choudhary Director,Hyderabad AP India.	S.KANNAN Annamalai University,TN
	S.Parvathi Devi Ph.D.-University of Allahabad	Satish Kumar Kalhotra Maulana Azad National Urdu University
	Sonal Singh, Vikram University, Ujjain	

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India**  
**Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org**



## मैला आंचल में प्रतिबिंबित समाज की अर्थव्यवस्था

प्रा.डॉ.एस.के. खोत

अध्यक्ष, हिंदी विभाग चंद्राबाई शांताप्पा शेंडुरे कॉलेज, हुपरी, जि.कोल्हापुर।

### सारांश :-

वर्तमान युग में हिंदी साहित्य के अंतर्गत आंचलिक उपन्यास का आषाढीत विकास हुआ है। भारत वर्ष में विभिन्न आंचल है। प्रत्येक आंचल की अपनी अपनी सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक पृष्ठभूमि होती है। आंचलिक उपन्यास लोकतंत्र के समान है, इसमें अत्यन्त साधारण नारी, पुरुष प्रमुख पात्र होते हैं, उनके अन्तर्गत विषेश रूप से यथार्थ, विष्वसनीय, सहानुभूतिपूर्ण जीवन का प्रस्तुतीकरण होता है। इसके अतिरिक्त आंचल के लिए विषेश कर दूरवर्ती अनुसूचित पिछड़ी जन जातियों को लेने की पद्धती है।<sup>1</sup>

### प्रस्तावना :

आंचलिक उपन्यासों में वातावरण एवं परिवेश की महत्ता होती है। स्पष्ट यह है की हर आंचलिक उपन्यास में स्थानीय रंग उचित मात्रा में होता है। डॉ.राजकुमार सिंह के शब्दों में, एक परिवेश की आत्मा जिस उपन्यास में साकार हो उठे उसे आंचलिक उपन्यास कहा जाएगा इसप्रकार की माटी की महक और मनःस्थिति का सजीव चित्रण आंचलिक का सच्चा स्वरूप है। तात्पर्य यह की, मनुष्यों के संपूर्ण जीवनक्रम को पूर्णता से प्रस्तुत करना उनके सुख-दुख उनके द्वंद्वों का निरूपण, उनके संकल्प-विकल्प का आलेखन उनकी लोकबोली के माध्यम से साकार हो उठता है। तो उसे या उस कृति को आंचलिक उपन्यास कहा जाता है।<sup>2</sup>

हिंदी का प्रथम आंचलिक उपन्यास कौनसा है यह कहना अत्यंत कठिन कार्य है। किंतु सत्य यह है कि कतिपय समीक्षक ने फणीश्वरनाथ रेणू लिखित मैला आंचल को ही हिंदी का प्रथम उपन्यास स्वीकार किया है। यह कहना गैर नहीं होगा की उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचंद की सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास की परंपरा का 1954 में लिखित मैला आंचल से स्मरण होता है। रेणुजी आंचल की नब्ज पहचानेवाले साहित्यकार थे।

फणीश्वरनाथ रेणुजी ने बिहार के पूर्णिया जिले के मेरीगंज नामक स्थान की सभ्यता, संस्कृति वहाँ की राजनीतिक पृष्ठभूमि, मठ महंतों के चरित्रहिन्ता तथा अफसरों की धूर्त प्रवृत्तियों का यथार्थ और स्वाभाविक चित्रण किया है। हमें यह नकारना नहीं होगा कि रेणुजी ने 'मैला आंचल' उपन्यास में राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलू को पूरी विश्वसनीयता के साथ अंकित किया है। इस कथानक में शोषण, भ्रष्टाचार, अन्याय और उत्पीडन का सच्चा तथा यथार्थ स्वर है। इस उपन्यास में स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्वकालीन भारतीय ग्रामीण जनता की आर्थिक स्थिति का यथावत चित्रण किया है। कृषक की स्थिति रेणुजी के शब्दों में, शसोने के अनाज से भरे हुए धरती के गुप्त भंडार का उद्घाटन करने वालों पर धरती माता का कोप होना स्वाभाविक है। यही कारण है कि आज जमीन के मालिकों ने, जमीन के व्यवस्थापकों ने और धरती के न्याय ने धरती पर इनका किसी किस्म का हक नहीं। जमने दिया है। जिस जमीन पर उतरे झोपड़े हैं, वह भी उनकी नहीं, हल में जुता हुआ बैल दिनभर खेत चारु (जोतता) करता है, इसलिए बैलों को भी धरती का हकदार कबूल किया जाए? यह कैसी बात।<sup>3</sup>

भारत एक विशाल तथा विविधता पूर्ण देश है। स्पष्ट है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार कृषि उद्योग है। ग्रामीण जीवन के आर्थिक व्यवस्था में विभिन्न बदलाव देखने को मिलते हैं।

डाक्टर प्रशांत मेरीगंज और आसपास के पंद्रह गावों का परिचय प्राप्त करता है। गाँव के मध्यवर्गीय एवं भू विहीन जनता की आर्थिक स्थिति शोचनीय है। डॉक्टर प्रशान्त किसान, बीमार लोग, मजदूर और रोगियों की दयनीय अवस्था देखकर आश्चर्य व्यक्त करते हैं। डाक्टर प्रशान्त ग्रामीण जीवन की दयनीय अवस्था से चिंतित होकर ममता को पत्र में लिखते हैं — शक्या करेगा

प्रा.डॉ.एस.के. खोत, "मैला आंचल में प्रतिबिंबित समाज की अर्थव्यवस्था"

Indian Streams Research Journal | Volume 4 | Issue 12 | Jan 2015 | Online & Print

वह संजीवनी बूटी खोजकर?उसे नहीं चाहिए संजीवनी । भूख और बेबसी से छटपटा कर मरने के लिए उन्हें जिलाना बहुत बड़ी कूरता होगी.... सुनते है, महात्मा गांधी ने कष्ट से तडपते हुए बछड़े को गोली से मारने की सलाह दी थी । वह नये संसार के लिए इंसान को स्वच्छ और सुन्दर बनाना चाहता था । यहाँ इन्सान है कहाँ?अभी पहला काम है, जानवर को इन्सान बनाना ।” आजादी के बाद गाँव उन्नति कर रहा है । फणीश्वरनाथ रेणु के शब्दों में, श्चरखा सेंटर खुल गया है । अब गाँव के गरीबी नहीं रहेगी । पटना से भी मास्टर आए है – चरखा मास्टर और करघा मास्टर । एक मास्तरनी भी आयी है, शऔरतों को चरखा सिखाने के लिए ।”<sup>5</sup> आज के युग में ग्राम सुधार की अनेक योजनाओं ने लोगों को प्रेरणा निर्माण कर उन्नती के लिए मार्ग खोला है । यह भी सच है कि, वस्तुओं की महँगाई के साथ–साथ अनाज भी मँहगा हो जाने के कारण गाँव के खाते–पिते किसानों को महँगाई की चिन्ता नहीं है । वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नवीनतम आविश्कारों, खादी तथा वैज्ञानिक यंत्रों के द्वारा खेत जगत में उन्नति का लाभ अनेक लोगों को हो रहा है । मैला आंचल में तहसिलदार टैक्टर के साथ साथ यंत्रों के द्वारा खेती करते है ।

बिहार के ग्रामीण समाज के मध्यमवर्गीय कृशकों के बारे में फणीश्वरनाथ रेणुजी लिखते हैं – श्इस इलाके के मंझले दर्जे के किसानों के पास यदि थोड़ी पूँजी हो गयी, तम्बाकू, धान पाट और मिर्च का भाव एक साल चढ गया, घर में शादी जमी नही हुई तो वह तुरन्त जमना जाते है । यदि मालिक जवान हो तो तुरन्त औन–पौन करने लगता है ।”<sup>6</sup> आजादी के बाद मध्यमवर्गीय कृशक समाज की अधोमुखी अर्थव्यवस्था के उदाहरण मेरीगंज में मिलते है ।

इस उपन्यास में खेतीहर श्रमिक मेरीगंज ग्राम छोडकर नगरों की ओर जा रहे हैं । ग्राम में वैज्ञानिक यन्त्रों के उपयोग की वृध्दि के कारण श्रमिकों के लिए काम कम हो गया है । श्रमिक ग्राम छोडकर कटिहार मिल में मजदूरी करने जाते है ।

यह सत्य है कि फसल के वक्त भाव गिरते है और फसल के उपरान्त भाव बढते है । यह आज ही हो रहा है ऐसी बिल्कुल बात नही है । इसके बारे में फणीश्वरनाथ रेणुजी लिखते है, श्अनाज के ऊँचे दर से गाँव के तीन ही व्यक्तियों ने लाभ उठाया है – तहसिलदार साहब ने सिंघजी ने और खेलावनसिंह यादव ने । छोटे छोटे किसानों की जमीनें कौडी के मोल बिक रही है । मजदूरों के सवा रुपये रोज मजदूरी मिलती है, लेकिन एक आदमी का भी पेट नहीं भरता । पाँच साल पहले सिर्फ पाँच आने रोज मजदूरी मिलती थी और उसी में घर भर के लोग खाते थे ।”<sup>7</sup>

मेरीगंज में खेती के वैज्ञानिक यन्त्रों कि सुविधा आयी । परिणामस्वरूप निश्चित ही सुधार हुआ किंतु गरीब लोगों की बेकारी में बढोत्तरी हुई । खेतीहर मजदूरों और श्रमिकों को गाँव में काम मिलना बंद हो गया । वे नगर की ओर जाने लगे । मजदूर मिल में काम करने के लिए जाते है । रेणुजी के शब्दों में, श्दो रुपया रोज मजदूरी मिलती है । गाँव में अब क्या रखा है?”<sup>7</sup>

इसप्रकार मैला आंचल में प्रतिबिंबित समाज की अर्थव्यवस्था के विविध अवयवों की समीक्षा करने के बाद हम इस निश्कर्श पर पहुँचते है कि फणीश्वरनाथ रेणुजी ने ग्रामीण जीवन की जीवंत सच्चाई अंकित की है। गौरव की बात है कि प्रत्येक वर्ग अपनी अपनी सीमाओं में उन्नति की और अग्रेसर हो रहा है । आजादी के बाद उच्च वर्ग अधिकांश मात्रा में विकास कर रहा है किंतु मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग विकास से दूर देखने को मिल रहा है । सरकार तथा वैज्ञानिक यंत्रों के कारण ग्रामीण जीवन के नक्शे में परिवर्तन स्पष्ट रूप में देखने हो मिल रहा है । तहसिलदार के मानसिक बदलाव के जरीए फणीश्वरनाथ रेणुजी संदेश देना चाहते है कि जमींदारी को किसानों की उस भूमी को स्वतः वापस लौटा देना चाहिए जिस पर उन्होंने अनीतिपूर्वक कब्जा किया है । सच्चाई यह है आर्थिक समृध्दि की आपाधपी में गाँव की निजता तथा सौंदर्य पर प्रश्नचिह्न लगा है?

lanHkZ ladsr

- 1.मेल्टिना टोप्पो, हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों की सांस्कृतिक चेतना, पृष्ठ – 25
- 2.डॉ.राजकुमारी सिंह, हिंदी तथा अंग्रेजी के आंचलिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन, पृष्ठ– 25
- 3.फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आंचल, पृष्ठ– 125
- 4.वही, पृष्ठ– 186
- 5.वही, पृष्ठ– 155
- 6.वही, पृष्ठ– 234
- 7.वही, पृष्ठ– 158

# Publish Research Article International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Book Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed, India

- ★ International Scientific Journal Consortium
- ★ OPEN J-GATE

## Associated and Indexed, USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal  
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra  
Contact-9595359435  
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com  
Website : www.isrj.org